७४. सह-अस्तित्ववाद क्यों कहा

आज दिनांक **०२ मार्च २०१३ दिन शनिवार**

विगत में ईश्वर, परमात्मा, मूल ऊर्जा के नाम दिये हैं | ये सब को छोड़ कर के सह-अस्तित्व क्यों लिखे? शोध का मुद्दा यही रहा | शोध करने से यह लगा कि मूल ऊर्जा अथवा ईश्वर यही मूल आधार नहीं है | ऊर्जा और वस्तु इन दोनों का सह- अस्तित्व ही, इनका नित्य वर्तमान ही, इनका संयुक्त वर्तमान ही अस्तित्व के रूप में देखा | देखने का विधि धारणा, ध्यान, समाधि, संयम विधि ही रहा | प्रकाशित करने का मूल आधार इतना ही रहा कि मानव जात अपराध और भ्रम से मुक्त हो | इसी को सह-अस्तित्व नाम दिया | यह योग में होता है | केवल सत्ता रह जाय अर्थात मूल ऊर्जा रह जाय पदार्थ न हो ऐसा कुछ होता नहीं | भौतिकवादी प्रयास किया कि मूल ऊर्जा से वस्तु का उत्पत्ति एवं पदार्थ मूल ऊर्जा में परिवर्तन होने का कल्पना किया | इस प्रयास में कोई भी सकारात्मक बात नहीं बना, नकारात्मक बात बहुत सारा बन गया | इसी आधार पर सर्वमानव अपराध में जीने के लिये तत्पर हुआ | आदिकाल से मानव विद्वानों का अनुसरण करते आया है | सुदूर विगत से मानव ही ज्ञानी,विज्ञानी, अज्ञानी माना है | इन तीनों का करतूत मानव को अपराध में जीने का बाध्यता पैदा किया |

ज्ञानी न चाहते हुए अपराध को न्याय कर नहीं पाया | अपराध में जीने का कारणों से विज्ञान अथवा आधुनिक ज्ञान, आदर्शवाद जिसको अपराध माना, अन्याय माना, भौतिकवाद उसको न्याय मान लिया | यही अपराध में जीने का आधार है | इसके विकल्प के रूप में मध्यस्थ दर्शन सह-अस्तित्ववाद को प्रस्तुत किया है | क्या चीज है सह-अस्तित्ववाद, मध्यस्थ दर्शन सह-अस्तित्ववाद? इसके मूल में अस्तित्व मूलक मानव केंद्रित चिंतन ही रहा | यह पूरा विकल्प है | हर मानव में न्यायपूर्वक जीना, समृद्धिपूर्वक जीना,अभयतापूर्वक जीने की अपेक्षा है | इसी का नाम है- मानव संस्कृति, सभ्यता, विधि, व्यवस्था | इस क्रम में पूरे अस्तित्व को अर्थात सह-अस्तित्व रूपी अस्तित्व को, तीसरे विधि से सत्ता में सम्पृक्त प्रकृति विधि को जो प्रस्तुत किया है, इसकी अपेक्षा में संसार से कुछ चाहते नहीं हैं | केवल अपराध, एवं भ्रम-मुक्ति चाहते हैं जिसके उपलब्धि क्रम में अध्ययन प्रस्तुत किया है, मूलतः पैसे से सम्बंधित नहीं है | यह केवल उपकार विधि से सार्थक होता है | इसे अच्छी तरह से पहचाना है | पहचानने के पश्चात ही मानव के सम्मुख अध्ययनार्थ प्रस्तुत किया है | साथ में यह भी पहचाना है कि तीनों प्रकार के मानव में अर्थात ज्ञानी, विज्ञानी, अज्ञानी कहलाने वाले मानवों में समझदारी का सम्भावना बना ही है |

हर मानव अर्थात ज्ञानी, विज्ञानी, अज्ञानी तीनों सार्थक होना ही चाहते हैं | सार्थकता जन मानस में पहुंचे इसके लिये विकल्प विधि को शिक्षा में अपनाए हैं | सह-अस्तित्ववादी शिक्षा को वासी जन मानस स्वीकारा है, और अपेक्षा कर रहा है पारंगत होने का | इस प्रमाण से समझ में आता है कि मानव जात सच्चाई को चाहता ही है | विवशतावश भ्रम और अपराध को सच मानता है | इसी क्रम में पूरा अस्तित्व को विकास क्रम-विकास, जागृति क्रम-जागृति नाम दिया है | विकास क्रम-विकास में परमाणु के रूप में पहचाना है | परमाणु को पहचानने का विधि यही रहा कि संयम काल में यह देखा है कि पत्थर पिघल करके बुरादा हो गयी, बुरादा और बुरादा हो गयी, होने के बाद एक बुरादा की स्थिति में हर एक भाग स्वचालित देखा |

उसी को परमाणु माना | परमाणु में ही विकास माना | परमाणु के विकास के रूप में जीवन होना देखा | गठनपूर्ण परमाणु होना ही जीवन का स्वरूप होना देखा | परमाणु में ही १० क्रियाओं का १२२ उप-क्रियाओं का होना देखा | उसी को अध्ययन हेतु प्रस्तुत किया है | इसी का नाम है विकल्प | विकल्प किसका पूछा जाय- भौतिकवाद ,आदर्शवाद का | आदर्शवाद रहस्य में फ़ंसने से सफल नहीं हुआ | भौतिकवाद अपराध में फ़ंसने से सफल होने का आशा ही नहीं है | इसलिये मानव को अखण्डता, सार्वभौमता में जीने का आवश्यकता है ही | इसी आधार पर अर्थात अखण्डता विधि से विश्व शांति, संतोष प्राप्त होना देखा है | सार्वभौमता विधि से संतोष, आनंद होना देखा है; उसको यथावत लिपिबद्ध करते हुये अध्ययनार्थ प्रस्तुत किया है | यही विकल्प है |

जय हो, मंगल हो, कल्याण हो |

- **ए. नागराज | प्रणेता एवं लेखक | मध्यस्थ दर्शन (सह-अस्तित्ववाद) | दिव्य पथ संस्थान(भजनाश्रम) | अमरकंटक | जिला-अनूपपुर (म. प्र.)**